इस्लाम के इतिहास में हज़रत अली (अ०) का स्थान

डॉ० सै० आबिद हुसैन साहब

अली, अमामे-मनअस्तोमनम गुलामे अली
हज़ार जाने गिरमी फ़िदाए नामे अली।
अली मेरे इमाम हैं मैं उनका दास हूँ।
हज़ार बहुमूल्य प्राण उनके नाम पर न्योछावर हैं।

अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली बिन अबीतालिब इस्लाम के इतिहास में विशिष्ट और अदभुत स्थान रखते हैं, जो आप को चार विशिष्टताओं के कारण मिला है।

एक तो आप को बचपन से अपने चचेरे भाई, इस्लाम के पैग़म्बर की गोद में दीक्षा पाने की बदौलत ''इस्लाम'' के बोध का यह दुर्लभ अवसर प्राप्त था जो किसी और को नसीब न था।

दूसरे ज्ञान- विज्ञान से ईश्वरीय प्रदत्त लगाव के कारण आपने इस्लामी-शिक्षा का भाष्य और व्याख्या अपने कथन और लेखन में जिस ढंग से की वह बस आप का ही हिस्सा न था।

तीसरे संयम-ईश्वर के भय, दान-दक्षिणा और तपस्या एवं उपासना में आप का दर्जा उतना ही ऊँचा था जितना ज्ञान-विज्ञान में।

चौथे बहादरी और ईमानी उत्साह से काम लेकर आप ने इस्लाम के शत्रुओं के मुक़ाबले में पैगम्बर (स०) और मुसलमानों की सुरक्षा के सिलसिले में जो कारनामें दिखाए वह अनुठे और अद्वितीय थे।

उस थोड़े समय में जब काल ने आपको इस्लामी जगत के बड़े भाग पर शासन का अवसर दिया, तो आपने लगातार गृहयुद्ध और बग़ावतों के दमन में व्यस्त रहने के बावजूद राज्य प्रशासन की व्यवस्था और प्रबन्ध के जो सिद्वान्त निरूपित किए और जिन पर बराबर कार्यबद्ध रहे वह सच्ची इस्लामी हुकूमत का मूल्यवान नमूना था। इस लिए आप की शहादत इतिहास की एक दुखदाई घटना है। और पिछले साढ़े तेरह सौ साल से उसकी यादगार प्रत्येक वर्ष वेदना के साथ मनाई जाती है। इसके साथ ही इस्लाम के इतिहास का एक दीप्तमान युग समाप्त हो गया।

निर्णय-शक्ति

हज़रत अली (अ०) की इस्लामी बसीरत (अंर्तद्रष्टि) और धर्म-ज्ञान में आप के मूल्यवान स्थान का कुछ अन्दाज़ इस बात से होता है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब अपने शासन काल में महत्व पूर्ण मुआमलों में सामान्यतः आप से परामर्श करते थे और आप की राय पर चलते थे। मिस्र के सुविख्यात साहित्यकार और इतिहासविद ''ताहा हुसैन'' ने अपनी अरबी पुस्तक ''अलीवबनूह'' में जिसका अनुवाद उर्दू में मौलाना अब्दुल हुमैरी नोमानी ने ''अली'' के नाम से किया है, लिखते हैं :-

हज़रत उमर हज़रत अली के धर्म विधि के गहरे ज्ञान से भली भाँति परिचित थे और फ़रमाया करते थे कि ''हम में सर्वाधिक फ़ैसला करने की योग्यता (हज़रत) अली में है''। हज़रत उमर को जब किसी मुआमले में उलझावे का सामना होता तो वह उसको हज़रत अली के सामने पेश करते। हज़रत अली के सदगुण बहुत ज़ियादा हैं। हज़रत पैग़म्बर के ''सहाबी''[1] अपने मतभेद के बावजूद इन सदगुणों को स्वीकार करते है। ''ताबई''[2] बुज़ुर्ग भी इन सदगुणों को मानते है। सुन्नी हज़रात को भी इन सदगुणों पर विश्वास है जैसे शिओं को विश्वास है।

ज्ञान-विज्ञान में हज़रत अली की अंर्तदृष्टि का सूबूत वो रत्न है जो आपके वक्तव्यों और पत्रों के संग्रह के रूप में '' नहजुल बलाग़ा'' में एकत्रित हैं। क़ुरआन मजीद में चिन्तन और मनन पर जो बल दिया गया है उसकी महत्ता को हज़रत अली से ज़ियादा किसी ने नहीं समझा। धर्म के मूल सिद्धान्त और उनकी व्याख्या देखना हो तो ''नहजुल बलाग़ा'' के ज्ञान में डूब कर देखिए।

अध्यात्मिक गुण

आम तौर पर उन तबीअतों में जो ज्ञान-विज्ञान से स्वाभाविक सुरूचि रखती है, संयम और ईश्वरीय भय, तपस्या और उपासना का कुछ ज़ियादा शौक़ नहीं होता है। मगर हज़रत अली के सर्व गुण सम्पन्न व्यक्तित्व में ये अध्यात्मिक गुण मानसिक गुणों से भी अधिक उज्जवल

भौर दीप्तिमान नज़र आते हैं। आप की उपासना में संलग्नता का बहुचर्चित नमूना यह वाक़ेआ है कि एक मरतबा लड़ाई के मैदान में दुश्मन का तीर आपको लग गया जब उसे खींच कर निकालनेकी कोशिश की जाती तो अति पीड़ा के कारण तीर निकालने को रोक देते थे। अंततः ये उपाय किया गया कि जब आप नमाज़ अदा करते हुए सज्दे में गए तो किसी ने पूरी शक्ति से खींच कर तीर निकाल लिया और आप को उपासना में तल्लीनता के कारण पीड़ा का तनिक भी एहसास नहीं हुआ।

आपकी तपस्या और ईश्वर से भय की अनगिनत मिसालों में से एक सुन्नी आलिम मौलाना अबदुस्सलाम क़िदवाई आपके चरित्र वर्णन में लिखते हैं "हज़रत अली बैतूल माल (राज्य कोष) की सारी आमदनी जनता पर ख़र्च कर देते। ऐ मरतबा बैतुल माल भर गया तो कार्यकर्ता ने सूचना दी।

आपने हुक्म दिया कूफ़े के शैख़ों को बुला के यह धन उनको सौंप दिया जाये। जब ये हो चुका तो उसे साफ़ कराके उसमें नमाज़ पढ़ी और फ़रमाया :- "ऐ सुनहली रूपहली धोखा धड़ी तू किसी और को मुग्ध करना।"

आपको जनता के धन से इतना परहेज़ था। एक व्यक्ति कहता है कि मैने उन्हें सख्त जाड़े में कम्बल का एक छोटा टुकड़ा ओढ़े देखा जाड़े के कारण सारी देह कांप रही थी मैंने कहा "खुदा आप पर रहेम करे आप अपनी जान के साथ यह व्यवहार क्यों करते हैं । इस बैतुल माल की आय में अल्लाह ने आप का और आप की आल औलाद का हिस्सा भी रखा है।" यह सुनकर आपने फ़रमाया कि "यह टुकड़ा तो मैं अपने घर मदीने से लाया था तुम्हारे माल से तो मैने कुछ नहीं लिया है।"

यही सिद्धान्त एक "सहाबी" जरार बिन ज़हमरा का एक कथन अनोहार करते हैं कि "मैंने उन्हें (हज़रत अली को) रोते हुए और ये कहते हुए सुना- "अरे दुनिया तू मुझे रिझाने आयी है दूर हो दूर, मेरे अलावा किसी और को धोखा दे, मैंने तो तुझे तीन तलाकें दे दी हैं, अब तेरी तरफ़ पलटने का कोई सवाल नहीं, तेरी आयु थोड़ी है मेरा विजासतातुक्ष्य है। तेरे जोखिम बड़े हैं हाय पाथेय की कती, यात्रा की दूरी और रास्ते का आतंक जनक होना।"

अद्वितीय वीरताः-

मज़ा यह है कि यही तपस्वी, संयमी यही रातों को जाग के उपासना करने वाला, समर क्षेत्र मेंवीरता और शौर्य के अद्‌भुत और अनूप-नमूने दिखाता है। पैग़म्बर और इस्लाम पर दुश्मनों के आक्रमण का मुकाबला करने के लिए हज़रत पैग़म्बर के सामने हुए युद्धों में हज़रत अली के कारनामे इतिहास के पन्नों पर सोने से लिखे हुए मौजूद है। यहां उनके बारे में बस इतना कह देना काफ़ी है कि "कर्रार"३ और " शेरे खुदा" की उपाधियों जिनके द्वारा आप को चौदह सौ साल से याद किया जाता है आप को अनायास ही नहीं मिल गई थीं।

आपने अपने बहुत थोड़े शासन काल तें सच्ची इस्लामी हुकूमत की वह मिसाल स्थापित कर दी जो आज तक दुनिया के लिए मार्ग-दीप का काम दे सकती है। इस का कुछ अनुमान इस घटना से होगा कि आप के शासन काल में एक बार आप का कवच नहीं गिर गया। संयोग से ये एक यहूदी के हाथ लगा। आप को जानकारी मिली तो आप ने काज़ी की अदालत में दावा दायर किया इस बात के साक्ष्य में कि उक्त कवच आप की ही सम्पत्ति है, आपने अपने बेटे हज़रत इमाम हसन (अ०) और अपने दास कंबर को प्रस्तुत किया, लेकिन क़ाज़ी ने यह गवाही नहीं मानी और ये कहा कि यह दोनों गवाह आपसे बहुत निकट का सम्बन्ध रखते है" और दावा ख़ारिज कर दिया आपने क़ाज़ी का फ़ैसला निःसकोच मान लिया और यहूदी यह देखकर बहुत प्रभावित हुआ और बोला "यह तो पैग़म्बरों की कार्यपद्धति है। क़ाज़ी ख़लीफ़ा के विरूद्ध फैसला देता है और ख़लीफा उसे किसी मीन मेख़ के बिना मान लेता है। ईश्वर की सौंगन्ध यह दीन सच्चा धर्म है।" और यह कहके उसने इस्लाम का कलिमा पढ़के इस्लाम ग्रहण कर लिया और कवच आप को सौंप दिया।

एक वाक़िआ सुन लीजिए। आप (हज़रत अली अ०) ने अपने चचा के बेटे की जिन्हें आप बहुत प्रिय रखते थे "बसरा" का प्रशासक नियुक्त किया। जब उनके गलत आचरण की ख़बरें आप तक पहुंची तो उनको एक ख़त लिखा जिसमें अत्यन्त दुख और क्रोध की अभिव्यक्ति की उसका अर्थ यह है कि-"ईश्वर से डरो पन्थ का धन वापस कर दो अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो ईश्वर की सौगन्ध जब मुझे अवसर मिलेगा मैं तुम को पकड़ के हिसाब करूंगा। हक़ हक़दारों तक पहूंचा दूँगा। अत्याचारी को मारूंगा, और पीड़ित के साथ न्याय करूंगा।"

उपरोक्त सच्चाइयों को सामने रखते हुए शायद

किसी न्यायवादी को यह मान लेने में संकोच हो कि ऐसे सर्वगुणी ख़लीफ़ा की शहादत इतिहास की एक महान त्रासदी है। यदि वह स्वभाविक आयु पाते तो इस्लाम के इतिहास का धारा पलट जाता और उसके यश से सारी दुनिया लाभान्वित होती।

शहादत की घटना और उसकी पृष्टि भूमि बयान करने के लिए एक पूरी पुस्तक की ज़रूरत होगी। यहाँ तो इतना ही अर्ज़ किया जा सकता है कि पहली सदी हिजरी की तीसरी दहाई में बहुत से मुसलमानों में इस्लाम की सच्चाई रूह (शुद्ध आत्मा) बाक़ी नहीं रही थी और कुछ लोगों में तो धन दौलत और शक्ति और शासन की हवस सभी नैतिक मूल्यों पर छा गई थी। इस्लामी जगत में झगड़े झंझट का एक तूफ़ान ख़ड़ा हो गया था। जिसको दबाने के लिए हज़रत अली को कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी। मुसलमानों का एक निविवेक गुट जो पहले हज़रत अली को मानता था। इस बात पर आप से नाराज़ हो गया कि जब ''सिफ़फ़ीन'' में अमीर मुआविया पर विजय पाने का पूरा अवसर उपलब्ध था तो आप ने उस मौके से फ़ायदा नहीं उठाया। यह लोग आपका साथ छोड़कर आप के विरोध पर उतर आए और ''ख़ारिजी'' के नाम से जाने गए। इन लोगों ने आपस में षडयन्त्र करके अब्दुर्रहमान बिन मुलजिम को आप के क़त्ल पर तैयार किया। रमज़ान (सन् 40 हिजरी) की उन्नीसवीं रात के पिछले पहर में जब आप घर से निकले और लोगों को नमाज़ के लिए आवाज़ देने लगे तो बिन मुलजिम ने जो मस्जिद में छुपा हुआ था तलवार का वार किया जो आप के माथे पर पड़ा और दिमाग तक पहुंच गया। लोग आप को घर लाए जहाँ आप एक दिन और दो रात शैय्या पर रहे और तीसरी रात निधन हो गया। इस रात की प्रभात के बारे में यह कहा जा सकता है जैसे कि ताहा हुसैन ने अपनी किताब में लिखा है कि ''धर्म के शासन के रात दिन बीत चुके थे और दुनिया की हुकूमत का धुंधलका प्रकट हो रहा था।''

नोटः-

मरहूम विद्वान लेखक ने हज़रत की शहादत का जो विवरण दिया है यह एक कमज़ोर रवायत (अनोहार) पर आधारित है अधिक विश्वसनीय कथन है कि आप पर सुबह की नमाज़ की पहली रकअत के दूसरे सज्दे की हालत में वार किया गया, तुरन्त आपकी जगह आपके बड़े बेटे इमाम हसन (अ०) ने ले ली और नमाज़ पूरी की, तब क़ातिल को पकड़ा गया और हज़रत को घर ले जाया गया। (उर्दू मासिक ''मुबीन'' मद्रास 14 के जून-जलाई 1977ई के अंक में प्रकाशित लेख का सम्पादन-व्यवस्था द्वारा अनुवाद)।

1-सहाबी वह व्यक्ति जिसने इस्लाम और ईमान के साथ हज़रत पैग़म्बर का दर्शन पाया हो और आपकी शिक्षा से फ़ायदा उठाया हो और फिर ईमान की हालत में मरा हो।

2-ताबिई-वह मुसलमान जिसने हज़रत पैग़म्बर के किसी सहाबी को देखा हो और उसकी शिक्षा से लाभ उठाया हो।

3-कर्रार बढ़-बढ़ के बार-बार हमला करने वाला योद्धा।

(तौहीद-अंक 2 पेज 125 से 126 तक)

(बकिया पेज न० 16 का ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,)

इमाम ने मर्ज़ी-ए-खुदा के पेशे नज़र उसको खाया और इमाम के जिस्म में ज़हर ने असर किया।

जब मोअतमिद को ज़हर के फ़ैलने की इत्तिलाअ हुई तो उसने दरबारी तबीब अब्दुल्लाह को इलाज के लिये भेजा जिसको ताकीद कर दी कि ज़हरखूरानी की इतिलाअ किसी को न होने पावे। रावी का बयान है कि आख़िरी दिन इमाम ने आबे ख़ालिस तलब करके वुज़ू किया और नमाज़ अदा फ़रमाई। बाद नमाज़ बिस्तर पर तशरीफ़ ले गये और उसी के चन्द लम्हे बाद इमाम की वफ़ात हो गयी। यह 260 हिज्री की आठवीं रबी-उल-अव्वल थी।

मोअतमिद इमाम को ज़हर से शहीद करने के बाद कोशिश में लगा रहा कि लोगों को बावर हो जाये कि इमाम को शहीद नहीं किया गया है बलकि अपनी तब्ई मौत से इन्तिक़ाल फ़रमाया मगर इमाम के जिस्म पर ज़हर का असर मोअतमिद की कोशिशों पर पानी फेरता रहा और आपकी ख़बरे शहादत पाकर पूरा शहरे सामरा हिलने लगा और आहो बुका का शोर बपा हो गया। उस रोज़ शहर सामरा मैदाने कियामत का नमूनः हो गया थां और ज़ालिम बादशाह के चेहरे का रंग फ़क़ था।

●●●

रुबाई

देबले हिन्द मौलाना फ़रज़न्द हुसैन ज़ाख़िर इन्तेहादी

दफ़्तर जो नुबुव्वत का मुकम्मल होगा
अहमद से नबी कोई ना अफ़ज़ल होगा
सफ़ बस्ता क़यामत में जब आयेंगे रुसुल
आख़िर का रसूल सबसे अव्वल होगा

●